# ^^jktLFkku ds ukxkSj ftys dh MhMokuk rglhy esa Hkwfe mi;ksx] ifjorZu rFkk mldk izHkko dk v/;;u^^

‘‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’’

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर

वे पीएच.डी का लघुसार (Synopsis)


निर्देशक

जेनीएन प्रोफेसर (डॉ.) धीर सिंह

शोधार्थी

जेवीएन तनवीर बानू

JVR-I/21/5843

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) भारत


2021

# ^^ jktLFkku d ukxkj fty dh MhMokuk rglhy e df'k Hkfe mi;kx] ifjorlu rFkk mldk iHkko dk v/;;u **

पृष्ठभूमि—

भू—उपयोग अर्थात् भूमि प्रयोग शब्दों का अंग्रेजी भाषा में Land Utilization अर्थात् Land Use कहते हैं। यहाँ पर भूमि प्रयोग शब्द से तात्पर्य धरातल के स्वाभविक लक्षण का बोध होना है। जब भूमि का प्रयोग मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार करता है तो उसे भू—भाग के लिए भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग उचित होता है। जहाँ पर भूमि उपयोग में भू—भाग का प्राकृतिक स्वरूप नष्ट हो जाता है, तथा मनुष्य की क्रियाओं का हस्तक्षेप में बढ़ोत्तरी हो जाती है। कृषि से सम्बन्धित क्रिया किसी—न किसी क्षेत्र पर की जाती रही है। इस क्षेत्र को समान्यतया धरातल (Ground) भूमि (Land), मृदा या पृथ्वी (Earth) आदि के नाम से पुकारते हैं। यहाँ पर कृषि भूमि क्षेत्र का अभिप्राय उस स्थान से लगाया जाता है, जहाँ मनुष्य अपनी जीविका चलाने के लिए खाद्यान्नों का उत्पादन करता है। कृषि भूमि के पहले हम धरातल पर अनेक रूप देखते हैं, जिसमें वन भूमि, मरूभूमि, पर्वत, मैदान, पठार इत्यादि आते हैं। विश्व में 20वीं शताब्दी में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है, इस बढ़ती हुई जनसख्ंया के कारण वनभूमि या अकृष्य भूमि को निरन्तर कृषि के अन्तर्गत प्रयोग में लाया जाने लगा है, जैसा कि भू— उपयोग, भौतिक कारकों जैसे भू—आकृति, जलवायु, मृदा के प्रकारों और मानवीय कारकों जैसे जनसंख्या, तकनीकी ज्ञान, परम्पंरा तथा संस्कृति से होता है।

भारत में कृषि उपयोग की दिशा में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतियाँ लायी गई थी, जिसमे फसलों का उत्पादन अच्छा हो सके। इन सब का प्रयोग कृषि भूमि क्षेत्र में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव देखने को मिलता है। हरित क्रान्ति ने भारत को जहाँ आत्मनिर्भर खाद्यान्न के रूप में पनपा है तथा प्रत्यक्ष रूप से खाद्य पदार्थ, पेय एवं तिलहन इत्यादि फसलों में बढ़ोत्तरी देखने को मिलती है। भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्र 32 करोड़ 88 लाख हैक्टेयर है, जिसमें से 30.54 करोड़ हैक्टेयर भूमि कृषि योग्य मानते है, जिसका प्रयोग में बढ़ोत्तरी भी देखने को मिली थी। कुल भूमि का लगभग 47.48 प्रतिशत भाग कृषि कार्य के योग्य माना जाता है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 14.5 हैक्टेयर है, जो विश्व का कुल 12 प्रतिशत कृषित भूमि हैं। कृषि भूमि से अभिप्राय उस भूमि से होता है, जिसका उपयोग कृषि फसलों के उत्पादन में होता है। इसके अन्तर्गत कृषि भूमि उपयोग के तीन उपादानों को शुद्ध बोया गया क्षेत्र, सिंचित क्षेत्र तथा एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र बहुफसलीय क्षेत्र अध्ययन करते हैं। कृषि आजीविका का सबसे बड़ा साधन होता है, भारत में आजिवीका के साथ—साथ ऐतिहासिक, साँस्कृतिक उत्सवों तथा पर्वों का प्रतीक भी है, भारतीय कृषि लगभग वर्षा पर निर्भर रहती है तथा एक वर्ष में तीन फसलें होती है, जैसे रबी, खरीफ तथा जायद।

''<u>कृषिर्धन्या कृषिमेघा जन्तुनां जीवन कृषि</u>''

अर्थात् कृषि सम्पत्ति एवं मेघा प्रदान करती है तथा कृषि व्यवस्था ने पूरे देश में विभिन्न कृषि उत्पादों जैसे भोजन, चारा, रेशा, तिलहन एवं जैव ऊर्जा के उत्पादन में अपना सकारात्मक योगदान दिया है। कृषि उपयोग के योग्य भूमि को बनाया जाता रहा है, जैसे–

(क) वर्तमान में वन क्षेत्रफल को बढ़ाना चाहिए।

(ख) कृषि के लिए अनुलब्ध भूमि, जिसमें नहर, सड़क, उद्योग , निवासित जनता आती है।

(ग) अकृषित भूमि, जिसमे चारागाह तथा कृषियोग्य बंजर भूमि शामिल होती है।

(घ) परती भूमि, जिसमें कृषि नहीं होती है।

(ड़) कृषि बंजर भूमि अर्थात् वह भूमि जिसे कृषि योग्य बनाया जा सकें।

(च) कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित होना इत्यादि।

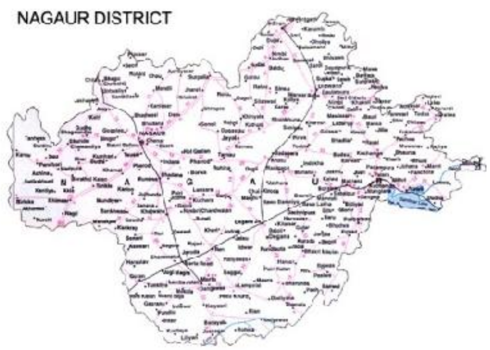


नागौर जिला : एक परिचय –

नागौर जिला राजस्थान के अजमेर सम्भाग में आता है। नागौर जिला राजस्थान के लगभग मध्य में है– 26°25'' – 27°40'' उत्तरी अक्षांश तथा 73°10'' – 75°15'' पूर्वी देशान्तर तथा इस जिले की सीमा सात जिलों से लगती है – जयपुर, अजमेर, पाली, जोधपुर, बीकानेर, चुरू, सीकर। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान राज्य का पाँचवा सबसे बड़ा जिला है। जिला कुल क्षेत्रफल 17718 है। 23 दिसम्बर 2021 नागौर जिले में 13 तहसीले है– नागौर, मेड़ता, जायल, लाडनूं, डीडवाना, नावां, मकराना, डेगाना, परबतसर, खिंवसर, कुचामनसिटी, मुण्डवा, रियांबड़ी। प्राचीन काल में नागौर को अहिच्छत्रपुर के नाम से पुकारा जाता था तथा इसकी राजधानी जंगल प्रदेश कहते थे। पहली बार अकबर ने अजमेर शरीफ की जियारत कर वापस नागौर में 1570 ईस्वी में आमेर के शासक भारमल की सहायता से अपना दरबार का नाम नागौर दरबार दिया।

डीडवाना तहसील : एक परिचय –

डीडवाना का अक्षांश 27.3997335 तथा देशान्तर 74.5705003 पर स्थित है। डीडवाना तहसील का क्षेत्रफल 1646.77 वर्ग किलोमीटर है तथा सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 329706 मनुष्य निवास करते हैं। डीडवाना तहसील की जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है अर्थात् 75529 काश्तकार तथा 11393 खेतीदार मजदूर है। तहसील की

जनसंख्या वितरण सन् 2011 के अनुसार 86.45 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है तथा 13.55 प्रतिशत जनसंख्या शहर में रहती है।

डीडवाना तहसील का जनसंख्या वितरण जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार :–

| क्र.सं. | लिंग | ग्रामीण | नगरीय | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | पुरूष | 143568 | 23408 | 166976 |
| 2 | महिला | 141463 | 21267 | 162730 |
| योग | | 285031 | 44675 | 329706 |

डीडवाना तहसील का ग्रामीण नगरीय जनसंख्या वितरण जनगणना वर्ष 2011 :–

| क्र.सं. | क्षेत्र | क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. | जनसंख्या | घनत्व(व्यक्ति वर्ग कि.मी.) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | ग्रामीण | 1632.27 | 285031 | 175 |
| 2 | शहरी | 14.50 | 44675 | 3081 |
| योग | | 1646.77 | 329706 | 200 |

डीडवाना तहसील में वर्ष 1941 से 2011 तक तीव्र घनात्मक जनसंख्या वृद्धि हुई। जहाँ स्वतन्त्रता से दशकीय वृद्धि दर 16 प्रतिशत रही तथा 1981 में 35 प्रतिशत उच्चतम जनसंख्या वृद्धि हुई, 1991 में तेज गिरावट रही तथा 2001 में पुनः वृद्धि दर ज्यादा हुई। सन् 2011 में वृद्धि दर में 29 प्रतिशत वृद्धि हुई, जो कि नागौर जिले की जनसंख्या वृद्धि 29.38 प्रतिशत से कम रही है। डीडवाना तहसील में ग्रामीण 985 ग्रामीण तथा नगरीय 909 तथा कुल 975 लिंगानुपात है(जिला सांख्यिकी रूपरेखा, 2005 नागौर) तथा 77.7 प्रतिशत हिन्दू 22.07 प्रतिशत, मुसलमान 0.19 जैन 0.02 सिक्ख 0.01 ईसाई, बौद्व नगण्य 0.01 प्रतिशत धर्म नहीं बताया। (जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2007, नागौर) डीडवाना तहसील में पंचायत मुख्यालय 17 में कुल 77 राजस्व ग्राम, मौलासर 34 तहसील में पंचायत मुख्यालय 23 में कुल 75 राजस्व ग्राम तथा छोटी खाटू में पंचायत मुख्यालय 14 में कुल 53 राजस्व ग्राम है, इस समय 23 दिसम्बर 2021 तक 205 ग्राम तहसील डीडवाना में है, तथा दो उपतहसील है तथा कुल 54 पंचायत मुख्यालय हैं।

2. <u>अध्ययन का उद्देश्य</u> :–

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य कृषि का उपयोग, परिवर्तन तथा उसके प्रभाव को ज्ञात करते हुए, सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाओं तथा विभिन्न योजनाओं द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन डीडवाना तहसील (नागौर जिले) को लेते हुए करना है। कृषि भूमि का उपयोग परिवर्तन तथा उसका प्रभाव के विभिन्न उपायों की खोज करना है, इस अध्ययन के माध्यम से कृषि योजनाकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासक तथा कृषक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त हसे सकें, जैसाकि भारत कृषि प्रधान देश है और भारत में कृषि का सीधा प्रभाव प्राथमिक व्यवसाय है, जो कि सीधे ग्रामीण जीवन से जुड़ा हुआ है और

ग्रामीणों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा अन्य तकनीकी क्षेत्र में प्रयासों को तय किया जा सकता है, निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के उद्देश्यों को तय किया जाएगा :–

1. कृषि भूमि उपयोग क्या है?
2. कृषि भूमि उपयोग कैसे किया जाता है?
3. कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तन कैसे होता है?
4. कृषि भूमि उपयोग में हुए परिवर्तनों से कृषि पर क्या प्रभाव पड़ा है?
5. कृषि भूमि उपयोग में हुए परिवर्तनों के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को ज्ञात करना।
6. कृषि भूमि उपयोग कैसे उचित हो, इसके सुझाव देने का प्रयास किया जायेगा।

3. साहित्य समीक्षा –

पूर्व मे लिखित लगभग पुस्तकें जो कि कृषि भूमि उपयोग, परिवर्तन पर लिखी गयी पढ़ने को मिलती है, परन्तु डीडवाना क्षेत्र में हुये तीव्रतम परिवर्तनों को इनसे ज्ञात नहीं किया गया हैं। पूर्व में लिखित साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि भूमि उपयोगों में निरन्तर परिवर्तन देखने को मिलता है, कुछ परिवर्तन तो त्रुटिपूर्ण गणना के कारण हो सकता है, किन्तु अन्य परिवर्तन भूमि उपयोग बदलने के कारण होता है (स्त्रोत डाईरेक्टेरट ऑफ टू कोनामिक्स एण्ड स्टेटिस्टिक्स–एग्रीकल्चरल स्टैटिस्टिक्स ऐट ए ग्लांस, 2007) तथा शर्मा श्रीकमल (सम्पादक) व भारत का वृहद भूगोल'' का अध्ययन करने पर प्राप्त साक्ष्य का आंकलन होता है कि भारत में गाँव के स्तर से देश के स्तर तक भूमि को उपयोग के वर्गों तथा उपवर्गों मे बाँटा जाता है। ये आंकड़ें स्वतंत्रता के बाद से उपलब्ध हैं। भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 34.87 करोड़ हेक्टर है। इसमें 92.8 प्रतिशत भूमि के उपयोग कृषिय उपयोग प्रधान है। वर्तमान समय में लगभग 14.03 करोड़ हैक्टर (46 प्रतिशत) निराकृषित भूमि हैं। यह अनुपात सन् 1950–51 मे लगभग 38.8 प्रतिशत ही था। इसके साथ ही लगभग 2–7 करोड़ हेक्टर 8.5 प्रतिशत भूमि पड़ती है, जिस पर पाँच सालों मे कभी– कभी खेती की गई है। इस प्रकार देश के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में से 54.5 प्रतिशत कृषित भूमि है। कृषित भूमि की दृष्टि से भारत सयुक्त राज्य अमेरीका के बाद विश्व का दूसरा बड़ा देश है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि प्राकृतिक संसाधनों में अमूल्य संसाधन के रूप में हैं। जैसा कि भूमि समस्त गतिविधियों का आधार होती है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक क्रियाओं का विकास होता हैं। क्षेत्रफल की दृष्टिकोण से इस पृथ्वी पर भारत का सातवाँ स्थान हैं। खाद्य एवं कृषि मंत्रालय द्वारा सन् 1948 के तहत नियुक्त टेक्नीकल कमेटी ऑफ कॉओरडीनेशन ऑफ एग्रीकल्चरल स्टैटिस्टिक्स ने भूमि उपयोग के ढ़ाँचें का अध्ययन किया, जिसमें भूमिखण्ड, कृषि भूमि, भूमि उपयोग का विभाजन, कृषि की प्रकृति, चारागाह, वनों, वृक्षों, बागों, कृषि अयोग्य भूमि, कृषि के योग्य खाली भूमि, परती भूमि, शुद्ध कृषि

भूमि इत्यादि का वर्णन किया गया है। 1930 ई. में डडले स्टाम्प महोदय द्वारा वृहत स्तर पर ग्रेट ब्रिटेन में प्रथम भूमि उपयोग सर्वेक्षण किया तथा 16 दिसम्बर 2014 को (FAO / UNEP 1999 ) भूमि उपयोग क्या है ? कि सन्दर्भ में तकनीकी भाषा में लिखा है कि किसी विशिष्ट भू–आवरण प्रकार की रचना परिवर्तन अथवा संरक्षण हेतु मानव द्वारा उस पर किये जाने वाले क्रिया कलापों के रूप में लिखा है। इसमें निम्नलिखित साहित्य एवं शोधपत्रों का अध्ययन किया गया है, जैसे :–

1. चटर्जी, (प्रो.) एस.पी. ने सबसे पहले भारत में मध्य पश्चिमी बंगाल के भूमि उपयोग सर्वेक्षण में 24 परगना तथा हावड़ा जिला का अध्ययन किया। (1945–52)
2. राव, (प्रो.) एल.एस. प्रकाश ने भारत के गोदावरी नदी क्षेत्र में भूमि उपयोग पर सर्वेक्षण कर उसकी विस्तृत विवेचना किया । (1947–56)
3. गुहा, एम. ने भारत के कोलकाता शहर का आर्थिक प्रारूप में परिवर्तन तथा महानगर की कार्यात्मक विकास तथा नगर नियोजन के आधुनिक स्वरूप का विस्तृत विवरण प्रस्तुत अपने शोध कार्य में व्यक्त किया। (1953–1966)
4. मुखर्जी, डी.एन. ने सिलीगुडी नगर की कार्यात्मक तथा प्रभाव का अध्ययन किया, जिसमें पश्चिम बंगाल की नगरीय संरचना के तथा कार्यात्मक वर्गीकरण, नगरीय उपान्त की संकल्पना और उसका निर्धारण तथा उसके वर्तमान प्रतिरूप को प्रस्तुत किया।(1957–1963)
5. सिंह, भू ने राजस्थान के जोधपुर की भूमि को पहचानने के लिए अपनायी विधि से शहर का आधा भाग कृषि तथा बाजार बागवानी से सम्बन्धित होता है।(1960)
6. भारद्वाज, ओ.पी. ने भारत के पंजाब राज्य के जालंधर जिले के पूर्वी भाग में मृदा अपरदन की समस्या का विस्तृत अध्ययन कर समाधान के उपाय बताये।(1960–64)
7. सफी (प्रो.) मोहम्मद ने भारत के पूर्वी उतर प्रदेश में भूमि उपयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर भूमि उपयोग के सन्दर्भ में व्याख्या की। (1963)
8. भाटिया, (प्रो.) एस.एस. ने भारत के उत्तर प्रदेश राज्य की कृषि क्षमता का अध्ययन किया तथा उसके निर्धारण क्षमता सूचकांक का अध्ययन किया, जिसके तहत इन्होनें 11 प्रमुख फसलों में उपज तथा क्षेत्रफल दोनों के आधार पर सूचकांक को जारी किया।(1967)
9. राव, हनुमन्त ने भारत के पंजाब राज्य के टैक्टर तथा टैक्टर के बिना कृषि कार्यों के तथ्यों को एकत्रित करके बहुरेखीय प्रतिगमन विधि से विश्लेषण किया तथा टैक्टर युक्त कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव के निष्कर्ष पर जोर दिया। (1979)
10. हुसैन, (प्रो.) माजिद ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चर ज्योग्राफी में कृषि का इतिहास, भौतिकी तत्वों, सामाजिक आर्थिक तत्व, प्रमुख कृषि व्यवस्था, कृषि सांख्यिकी तथा निर्देशन, मॉडल्स, भारत की हरित क्रान्ति की व्याख्या की है। (1979)

11. पाल, एस.पी. ने कृषि के आधुनिकीकरण के तहत सिंचाई के प्रभावों तथा अन्य साधनों का विश्लेषण कर कृषि आधुनिकीकरण की व्याख्या प्रस्तुत की। (1985)
12. सिंह, (प्रो.) जसबीर तथा टिलोन, (प्रो.) एस.एस.ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चर ज्योग्राफी में दो भाग बनाकर अपने अध्ययन को व्यक्त किया है, जिसके प्रथम भाग में कृषि भूगोल का पश्चिम तथा अध्ययन के दृष्टिकोण को व्यक्त किया है तथा दूसरे भाग में कृषि प्रकार के भौतिकी स्वरूप को व्यक्त किया गया, जिसमें मृदा का वर्गीकरण भू–उपयोग तथा आर्द्रता इत्यादि की व्याख्या की है। (1984)
13. खर्कवाल, एस.सी. ने भारत के हिमालय क्षेत्र की कृषि को दो भागों में विभाजित किया, जो क्रमशः स्थायी कृषि तथा चलायमान कृषि है। जहाँ पश्चिमी हिमालय में स्थायी कृषि की प्रधानता है तो पूर्वी हिमालय क्षेत्र के अधिकतर भू–भाग पर चलायमान कृषि होती है। (1996–97)
14. कुमार, (डॉ.) प्रमिला ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चर चेंज इन अरबन में भोपाल के सन्दर्भ में लिखा, जिसमें शहरी क्षेत्र का मूल्यांकन किया गया तथा उसके आर्थिक तत्वों की कृषि के साथ जोड़ा गया तथा पाँच गाँवों का सर्वे करके कृषि का रिब्बेन विकास विशेष रूप से ग्रामीण शहरी क्षेत्र के सन्दर्भ में व्याख्या की तथा राजकीय प्रोजेक्टो का विश्लेषण कर उसका मूल्यांकन किया है। (1980)
15. चौहान, टी.एस ने अपनी पुस्तक ''एग्रीकल्चर ज्योग्राफी ए स्टेडी ऑफ राजस्थान स्टेट'' में कृषि भूगोल की प्रकृति, क्षेत्र, भौतिक पर्यावरण, जनसंख्या, जल संसाधन तथा उसका उपयोग, पशुधन, भू–उपयोग, कृषि संरचना, कृषि विकास, कृषि योजना, तथा कृषि का विकास कैसे हो की व्याख्या राजस्थान के सन्दर्भ में की गयी है। (1987)
16. सिंह, (प्रो.) जसवीर ने एग्रीकल्चर ज्योग्राफी ऑफ हरियाणा राज्य में विशेष रूप से कृषि के आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में विवेचना की तथा उन्होंने कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों की व्याख्या विशेष रूप से सन् 1964 से सन् 1973 के एक दशक का अध्ययन कर विश्लेषित किया। (2000)
17. पाल, एस.पी ने कृषि आधुनिकीकरण की व्याख्या राष्ट्रीय आर्थिक एवं व्यावहारिक शोध संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित कॅन्ट्रीव्यूशन ऑफ इरिगेशन टू प्रोडक्शन प्रोडक्विविटी से सिंचाई साधनों के प्रभाव तथा कृषि आधुनिकीकरण की विवेचना की, जैसे– नवीन बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, औषधियों तथा कृषि उत्पादन पर सिंचाई के प्रभावों की व्याख्या की।(2002)
18. गुर्जर, आर.के. ने भारत के राजस्थान राज्य में इंदिरा गाँधी नहर क्षेत्र में हुए आधुनिकीकरण विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में कार्यों की व्याख्या की।(2003)
19. करकरा, जी.एस. ने राजस्थान से भूमि का उपयोग, उसकी विधियों, कृषि भूमि तथा उसके प्रतिरूप और मृदा का संरक्षण करने की विधि का सुस्पष्ट उल्लेख किया गया है। (2004)

20. सिंह, आर.पी. ने अपने शोध भारत में शुष्क कृषि का दीर्घकालीन विकास में भारत में शुष्क कृषि की उत्पादकता में वृद्धि कैसे हो सकती है तथा दीर्घकालीन विकास में शुष्क कृषि के सम्बन्ध में संकल्पना प्रस्तुत की है।(2006)
21. चौहान, डी.एस. ने भूमि उपयोग के अध्ययन में कृषि भूमि तथा उसके उपयोग, प्रारूप का अध्ययन किया, जिसके तहत भूमि के उपयोग के नियोजन, मृदा का संरक्षण, कृषि भूमि विकास तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। (2008)
22. मैठानी, डी.डी. तथा नौटियल, आर ने उत्तराखण्ड का भूगोल शीर्षक में भूमि के उपयोग के तहत उत्तराखण्ड की कृषि भूमि को विशेष रूप से तीन वर्गों में विभाजित कर अध्ययन किया, जिससे की तलाब अथवा नदी घाटी कृषि भूमि, मैदानी कृषि भूमि, पहाड़ी–ढालों की कृषि भूमि का अध्ययन महत्वपूर्ण रहा।(2010)
23. कुमार, सतीश ने अपने अध्ययन में सहकार किसान कार्ड योजना का भी कृषि के आधुनिकीकरण में महत्ती भूमिका मानी है। (2010)
24. त्रिपाठी, केशरी नन्दन ने अपने अध्ययन में पर्वतीय भागों में कृषि के तहत सिंचाई के साधनों के तहत तीन प्रकारों में बाँटा है– तलाब भूमि, उपजाऊँ भूमि, इजरान भूमि।(2012)
25. गुर्जर, धर्मपाल ने अलवर जिले में कृषि पारिस्थितिकी एवं जनसंख्या गत्यात्मक के भौगोलिक अध्ययन पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत कर कृषि पारिस्थितिक तथा जनसंख्या का तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया।(2012)
26. तिवारी, आर.सी. तथा सिंह बी.एन. ने अपनी कृषि भूगोल पुस्तक में कृषि भूमि उपयोग को स्पष्ट करने के लिये विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या की जिसके तहत वान्थ्यूनेन का सिद्धान्त, सिनक्लेयर का सिद्धान्त, ओलोफ जोनासन का सिद्वान्त, वाल्टर इजार्ड का सिद्वान्त इत्यादि सिद्वान्तों के माध्यम से कृषि भूमि उपयोग को स्पष्ट किया है। (2012)
27. श्रीवास्तव, एस. ने अपने अध्ययन में सुल्तानपुर में कृषि अर्थव्यवस्था पर सिंचित तथा गैर–सिंचित क्षेत्रों के प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत व्यक्त करने का एक सफल प्रयास किया है– 1. कृषि अयोग्य भूमि– उसर और अयोग्य भूमि, कृषि तर उपयोग में लाई गई भूमि, 2. कृषि योग्य बेकार भूमि – कृषि व बंजर भूमि, वृक्षो का क्षेत्रफल, चारागाह, 3. वन, 4. परती भूमि तथा 5. शुद्व बोया गया क्षेत्रफल (2014)
28. मल, (प्रो.) पूरण ने नीमकाथाना तहसील पर जनसंख्या व जल की समस्याओं का संक्षिप्त अध्ययन किया, जिसमें इसकी चुनौतियों तथा निवारण पर शोध प्रस्तुत किया, जिसमें वर्षा की कमी होना तथा जनसंख्या बढ़ोत्तरी तथा इस कारण पेयजल की समस्याओं तथा समाधान पर जारी की गई विभिन्न सरकारी योजनओं का ब्यौरा प्रस्तुत किया (2010)।

29. जाट, (डॉ.) बी.एल. ने हनुमानगढ़ जिले में भूमि उपयोग तथा फसल प्रारूप में बदलाव के अध्ययन के तहत निरन्तर बदलती भूमि उपयोग प्रतिरूप तथा फसल प्रारूप का परिस्थितियों के अनुसार एक सूक्ष्म विश्लेषण करने का प्रयास किया गया।(2008)
30. कालिया, सरीना तथा गुप्ता, प्रेरणा ने अपने अध्ययन में विशेष रूप से अलवर जिले में कृषि का परिवर्तित स्वरूप में विशेष रूप से स्थानिय तथा कालिक परिवर्तनों के सन्दर्भ में 2 वर्षीय (1984–85 से 2004–05) का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर कृषि के स्वरूपों को ज्ञात करने का एक प्रयास किया।(2010)
31. तिवारी, आर.सी. ने अपने पुस्तक के छठे संस्करण भारत के भूगोल में लिखा है कि भारत में विशेष रूप से भूमि उपयोग नीति के मुख्य लक्ष्य रहे, जैसे – भूमि का उपयोग का विस्तृत और वैज्ञानिक सर्वेक्षण करवाना, वनों की नीति के तहत 33.3 प्रतिशत भूमि का वनावरण तैयार करना, गैर– कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र में बढोत्तरी को कम करना या रोकना, बंजर भूमि के विकास करके कृषि योग्य बनाना, चारागाहों को स्थायी विकास का प्रयास करना, तथा शस्य गहनता में बढोत्तरी करने का प्रयास करना तय किया।(2013)
32. कोबिंग एवं एडमंड ने एसेसिंग एण्ड मैनेजिंग ग्राउण्ड वाटर इनडिफ्फेरेण्ट एनवायरनमेण्ट में विशेष रूप से विभिन्न प्रकार के भूगर्भिक संरचना के तहत भूमिगत जल का आंकलन किया तथा भूमिगत जल का प्रबन्धन किस प्रकार से किया जा सकता है ? उसका विस्तृत विवरण देने का प्रयास किया।(2018)
33. चौहान, डॉ. धमेन्द्र सिंह ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चर ज्योग्राफी में भौगोलिक पृष्ठभूमि पर्यावरण जनसंख्या की संरचना, हरित क्रांति, जल संयोजन इत्यादि का हरियाणा के कृषि आधुनिकीकरण पर प्रकाश डाला है। (2010)
34. अग्रवाल, (डॉ.) एन.एल ने अपनी पुस्तक भारतीय कृषि का अर्थतंत्र में कृषि अर्थशास्त्री की परिभाषा भारतीय अर्थव्यवस्था, खाद्य समस्या कृषि उत्पादन के कारक, फॉर्म प्रबन्ध, कृषि वित्त, कृषि ऋण के स्त्रोत, कृषि विपणन, कृषि कीमतें, कृषि कराधान, पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि, कृषि तकनीकी ज्ञान, कृषि बीमा, भारत में सहकारिता, बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय कृषि नीति, भारत में गरीबी, गैर–समझौता, डंकल प्रस्ताव एवं विश्व व्यापार संगठन इत्यादि का अध्ययन किया गया है। (2008)
35. यादव, (डॉ.) चन्द्रशेखर कृषि भूगोल में लिखा है कि कृषि भूगोल, कृषि के विकास का इतिहास, कृषि को प्रभावित करने वाले तत्व, कृषि का वर्गीकरण, प्रकारिकी, अवस्थापन के सिद्वान्त, विश्व की प्रमुख कृषि प्रजातियां, वर्तमान कृषि के नवाचार, खाद्य फसलों का विश्व वितरण, व्यापारिक फसलों का विश्व वितरण, कृषि की समस्याएं, कृषि प्रदेश, कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता झुकाव, भूमि व्यवस्था एवं भूमि सुधार कृषि श्रमिक, मजदूरी, कृषि संगठन, भारत की प्रमुख फसलें, भारत के प्रमुख कृषि प्रदेशों का विस्तरित विवरण प्रस्तुत किया है। (2012)

36. शुक्ला, राजेश एवं शुक्ला, रश्मि ने अपनी पुस्तक कृषि भूगोल में कृषि भूगोल का परिचय, इतिहास, प्रभावित करने वाले कारक, कृषि का वर्गीकरण, प्रकारिकी, कृषि अवस्थापन के सिद्धान्त, संसार की प्रमुख कृषि पद्धतियाँ, आधुनिक कृषि के नवाचार, भारतीय कृषि, खाद्य फसलों का विश्व वितरण, व्यापारिक फसलों का विश्व वितरण का गहन अध्ययन कर विश्लेषित किया है। (2014)
37. शफी, एम ने कृषि आधुनिकरण को उत्तर प्रदेश में कृषि दक्षता का निदान करते हुए श्रेणीबार गुणांक पद्धति का प्रयोग किया था, इन्होने दक्षता निर्धारण के लिए प्रति ईकाई क्षेत्र मे उच्चतम उत्पादन को आधार बनाया तथा 5 कृषि दक्षता क्षेत्रों के निर्धारण के लिए प्रति ईकाई क्षेत्र मे उच्चतम उत्पादन के अतिरिक्त श्रमिको द्वारा उत्पादन तथा कृषि उत्पादकता का मुल्य भी दक्षता निर्धारण के आधार पर किया जा सकता है। (1999)
38. चटर्जी ने शुष्क क्षेत्रों के जल संसाधनों पर मनुष्यों की क्रियाओं का अध्ययन करते हुए बताया है कि शुष्क क्षेत्रों के जल संसाधनो के निर्भता मनुष्य निर्धारित करते है, जिस कारण जल संसाधनों का भी अध्ययन करना आवश्यक है। (2003)
39. श्रीवास्तव, एस ने सुल्तानपुर के कृषि अर्थव्यवस्था के सिंचित व गैर–सिंचित क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया है :–

1.– कृषि अयोग्य भूमि – (अ) उसर और अयोग्य भूमि (ब) कृषितर उपयोग में लाई गई भूमि,

2. कृषि योग्य बेकार भूमि – (अ) कृषि व बंजर भूमि (ब) वृक्षों का क्षेत्रफल (स) चारागाह,

3. वन,

4. परती भूमि,

5. शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल। (2014)

40. गौतम, अलका ने अपनी पुस्तक कृषि भूगोल में कृषि प्रादेशीकरण, कृषि पद्धतियाँ, कृषि भूमि उपयोग तथा कृषि समस्याओं के साथ विकास कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण दिया।(2018)
41. चौहान (डॉ) तेज सिंह ने ''राजस्थान का भूगोल'' में राजस्थान का भूगोल से सम्बन्धित परिचय क्षेत्रफल, निर्मित, भूगर्भिक संरचना, भौतिक स्वरूप, थार की उत्पति, एवं मरूस्थलीकरण, अपवाद प्रणाली और झीलें, वन व वनस्पति, मिट्टी संसाधन, जल संसाधन, वन्य पशु–पक्षी, आपदा प्रबन्धन, परती भूमि/बंजर भूमि, कृषि संसाधन, सिंचाई, पशुपालन, खनिज संसाधन, सिंचाई, ऊर्जा के स्त्रोत, उद्योग, यातायात, संचार एवं व्यापार, जनसंख्या, जनजाति तथा आदिवासी पर्यटन व्यवसाय तथा भौगोलिक प्रदेश की व्याख्या की गई है। (2018)
42. लाल, डी.एस. ने अपनी पुस्तक ''जलवायु विज्ञान'' को 25 अध्यायों में विभाजित किया है, जिसमें वायुमण्डल, जलवायु का वर्गीकरण परिवर्तन तथा व्यावहारिक जलवायु, उत्पन्न बीमारियों का वर्णन किया है। (2009)

43. अनवर शकील ने लेख ''आधुनिक कृषि और पर्यावरण पर इसका प्रभाव'' में लिखा है कि आधुनिक कृषि के सन्दर्भ में लिखा और पर्यावरण पर आधुनिक कृषि का प्रभाव तथा आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया है। (अप्रैल, 2018)
44. खुल्लर, डी.आर. ने अपनी पुस्तक ''ज्योग्राफी'' को 10 खण्ड़ों में विभाजित किया है, इनमें पानी, पृथ्वी पर जीवन, परिचय, वातावरण, मृदा इत्यादि के सन्दर्भ में लिखा है। (2020)
45. चौहान, टी.एस. ने अपनी पुस्तक ''ज्योग्रीफी ऑफ राजस्थान'' को 23 अध्यायों में विभाजित किया, जिसमें इन्होंने पर्यावरण प्रदूषण, वातावरण, झीलें तथा पानी की निकासी, भूगर्भशास्त्र की परिचर्चा की है। (2020)
46. आत्रे, (डॉ.) संजय, उपाध्याय, सच्चिदानन्द तथा यादव अमित ने अपनी पुस्तक ''एग्रीकल्चर स्कीम्स'' का 22 अध्यायों में विभाजित किया है, जिसमें विशेष रूप से कृषि कल्याण अभियान, कृषि उन्नति योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड इत्यादि का वर्णन किया है। (2019)
47. अग्रवाल (डॉ.) एन.एल. ने अपनी पुस्तक ''भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र'' में कृषि अर्थशास्त्र परिभाषा, भारतीय अर्थव्यवस्था, खाद्य समस्या, कृषि उत्पादन के कारक, फॉर्म प्रबन्ध, कृषि वित्त, कृषि ऋण के स्रोत, कृषि विपणन, कृषि कीमतें, कृषि कराधान, पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि, कृषि तकनीकी ज्ञान, कृषि बीमा, भारत में सहकारिता, बीस – सूत्री आर्थिक कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय कृषि नीति, भारत में गरीबी, गैर–समझौता, डंकल प्रस्ताव एवं विश्व व्यापार संगठन, इत्यादि का अध्ययन किया गया है। (2008)
48. यादव, (डॉ.) चन्द्रशेखर, ''कृषि भूगोल'' में लिखा है कि कृषि भूगोल, कृषि के विकास का इतिहास, कृषि को प्रभावित करने वाले तत्व, कृषि का वर्गीकरण, प्रकारिकी, अवस्थापन के सिद्धान्त, विश्व की प्रमुख कृषि प्रजातियाँ, वर्तमान कृषि के नवाचार, खाद्य फसलों का विश्व वितरण व्यापारिक फसलों का विश्व वितरण, कृषि की समस्याएँ, कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता झुकाव, भूमि जोते, भूमि व्यवस्था एवं भूमि सुधार कृषि श्रमिक, मजदूरी, कृषि संगठन भारत की प्रमुख फसलें, भारत के प्रमुख कृषि प्रदेशों का विस्तरित विवरण प्रस्तुत किया है। (2012) इत्यादि में विवरण मिलता है।

कृषि भूगोल तथा जनसंख्या भूगोल पर अनेक विद्वानों ने अपने शोध कार्य एवं रचनाओं में उल्लेख किया है, जिसके भूमि का उपयोग, भूमि परिवर्तन और उसका प्रभाव का अलग–अलग क्षेत्रों के अध्ययन हमें देखने को मिलता है परन्तु राजस्थान के नागौर जिले की तहसील डीडवाना पर अभी तक इसका अध्ययन नहीं किया गया है, जिसका अध्ययन करना अति आवश्यक है और कृषि क्षेत्र में सुधार की अपेक्षा इससे जाहिर होगी।

4. शोध प्रविधि–

इस अनुसंधान में कृषि भूमि का उपयोग, परिवर्तन तथा उसके प्रभाव का अध्ययन राजस्थान राज्य के नागौर जिले के तहसील डीडवाना का सुक्ष्म अध्ययन किया जाएगा, जिसमें ऐतिहासिक, सर्वेक्षण, प्रयोगात्मक एवं तुलनात्मक रूप से क्षेत्रीय अध्ययन (Area Studies), व्यक्ति सूची अध्ययन (Panel Studies) तथा व्यक्तिवृत अध्ययन (Case Study)के माध्यम से करते हुये, वृहत स्तर पर लागू किया जा सके, ऐसा एक प्रयास होगा। अनुसंधान को अंग्रेजी में Research कहते हैं जो दो शब्दों से मिलकर बना है, जैसे Re + Search = Research बार–बार खोजना।

अनुसंधान के लिए अनेक प्रविधियों का प्रयोग में ले सकेंगे, जिसके माध्यम से शोधकर्ता अध्ययन को विश्वसनीय व वैध बनाकर ठोस परिणामों को प्रस्तुत कर सकें। सर्वेक्षण विधि– 1) विवरणात्मक 2) विश्लेष्णात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा तथा निदर्शन (Sampling) के प्रविधि के तहत सम्भावना निदर्शन तथा असम्भाव्यकता निदर्शन का प्रयोग करने का प्रयास किया जायेगा। इस शोध मे सभी प्रकार के प्राथमिक तथा द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया जायेगा। इस अनुसंधान में तथा (आँकड़ों) सामग्री के स्त्रोत निम्न लिखित प्रकर से प्रयोग में लिये जायेंगे–

1) प्राथमिक स्त्रोत (Primary Sources)

i) प्रत्यक्ष स्त्रोत (Direct Sources)

a)सहभागी निरीक्षण (Participant Observation)

b) असहभागी निरीक्षण (Non-Participant Observation)

c) अर्द्ध–सहभागी निरीक्षण (Quest Participant Observation)

इनके अलावा

a) साक्षात्कार (Interviews)

b) अनुसूचियाँ (Schedules)

ii) अप्रत्यक्ष स्त्रोत (Indirect Sources)

a) प्रश्नावली (Questionnaire)

b) दूरभाष/मोबाइल साक्षात्कार (Telephone/ mobile Interview)

c) पैनल पद्धति (Panel Techniques)

(2) द्वितीय स्त्रोत (Secondary Sources)

a) व्यक्तिगत प्रलेख (Personal Documents)

i) जीवन इतिहास (Life History)

ii) डायरियाँ (Diaries)

iii) पत्र (Letter)

iv) संस्मरण (Memories)

b) सार्वजनिक प्रलेख (Public Documents)

i) प्रकाशित प्रलेख (Published Documents)

क) रिकॉर्ड (Record)

ख) प्रकाशित आँकड़ें (Published Statistics)

ग) पत्र व पत्रिकाओं की रिपोर्ट (Report of the News papers)

घ) विविध सामग्री पुस्तकें (Miscellamens Material) उपन्यास इत्यादि

ii) अप्रकाशित प्रलेख (Unpublished Documents)

क) गोपनीय रिकार्ड (Confidential Records)

ख) दुर्लभ हस्तलेख (Rare Manuscripts)

ग) शोध रिपोर्ट (Research Reports)

इन सभी स्त्रोतों के माध्यम से शोध कार्य करने का प्रयास किया जा सकेगा।

5- 'kks/kkijd iz'u&

शोधकर्ता द्वारा किसी भी शोध के लिए किसी न किसी प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते रहना आवश्यक है, नवीन समस्यायें या नवीन प्रश्नों के उत्पन्न होने के अभाव में शोध नही किया जा सकता है अतः इस शोध के लिए जो विषय चुना गया है, उसमें अनेक प्रश्नों का उत्पन्न होना जायज है जैसे भारत एक कृषि प्रधान देश है, फिर भी कृषि भूमि का उपयोग, परिवर्तन होता हुआ, हम देखते है ऐसा क्यों होता है? को जानना आवश्यक है।

—कृषि भूमि का उपयोग सही ढंग से क्यों नहीं हो पाता है? को प्रत्यक्ष रूप से जानना।

—कृषि भूमि का कभी कृषि के लिए उपयोग होता था, परन्तु अब नहीं तो इसके परिवर्तन के क्या कारण रहें? उसको ज्ञात करना महत्वपूर्ण है।

—कृषि भूमि के परिवर्तन हो जाने से ग्रामीण परिवेश तथा कृषकों के जीवन स्तर में क्या प्रभाव पड़ा? का अध्ययन करना अति आवश्यक है, इत्यादि।

6. शोध परिकल्पनाएँ—

कृषि भूमि उपयोग के तहत कृषि के भूमि उपयोग के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के ज्ञात किया जा सकेगा। कृषि में सुधार हो सकेगा तथा खाद्यान्नों की उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो सकेगी। कृषि भूमि उपयोग में कैसे परिवर्तन आ रहा है तथा इसके पीछे कारणों में हम यह देख सकते है कि जमीन की अनुपलब्धता तथा कृषि भूमि का आकृषि में लेना रहा है, भौतिकतावादी मानसिक प्रवृति के कारण मनुष्य कृषि को अमीर या भू—माफिया को बेच देता है और वह व्यक्ति उस जमीन के प्लॉट काट देता है, जिससे कृषि भूमि का परिवर्तन हो जाता है तथा अन्य कारणों में हम यह मान सकते हैं कि मनुष्य द्वारा जमीन में से पानी का अत्यधिक दोहन करना, जिससे जमीन कुआँ से सिंचाई या ट्यूबबैल से सिंचाई करते थे परन्तु आज जमीन के अन्दर पानी के स्त्रोत खत्म हो गये है, जिसका सीधा सा असर यह हुआ है कि शीतकालीन कृषि का क्षेत्र कम हो गया है।

इसके अलावा आवारा पशुधन ने भी खेती मे फसल को नहीं होने देते हैं, जिसके कारण किसान आवारा पशुओं से तंग आकर खेती करना बन्द सा कर दिया। लगातार प्रतिवर्ष खेती करने से भी अनाज का उत्पादन कम होता है, इस कारण भी तथा खेती करना महंगा हुआ है तथा क्योंकि पेट्रोल व डीजल के भाव बढ़ गये तथा बढ़े हुये भावों के कारण भी खेती महंगी हो गयी है।

7. अनुक्रमणिक (अध्याय की रूपरेखा)

1.विषय का परिचय
2.शोध प्रविधि
3.साहित्य समीक्षा
4.भौगोलिक परिदृश्य
5.संसाधन एवं उपयोग : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
6.प्रतिदर्श पटवार वृत्तों की परिचर्या
7.निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध कार्य योजना :–

शोधकर्ता को अपना शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए नियमानुसार समय दिया जाना अपरिहार्य हैं, इस शोधकार्य को लगभग दो वर्ष में पूर्ण करने का प्रयास रहेगा, जिससे निम्नांकित सारिणी द्वारा समझ सकते हैं–

| क्र.सं. | अध्याय का नम्बंर | कार्यकाल |
|---|---|---|
| 1. | 1,2 | प्रथम छः माह में |
| 2. | 3,4 | द्वितीय छः माह में |
| 3. | 5,6 | तृतीय छः माह में |
| 4. | 7 | चतुर्थ छः माह में |

इस शोध इसी समय में तथ्यों का संकलन, सारणियन कर निष्कर्षों का आंकलन कर सुझावों को प्रस्तुत किया जाएगा तथा अन्त में साराशं व शोध ग्रन्थकों को प्रस्तुत किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
वेब लिंक
प्रतिवेदन एवं अनुसुची
अनुसंधानात्मक लेख
महत्वपूर्ण शब्दावली

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं वेब पार्टल

1.Chatterjee (1952) "Land Vtilization Survey of Howard Districts", Geographical Review of India, V0L-14

2.वारलो, आर एण्ड जॉनसन बी.डब्ल्यू (1954), ''लैण्ड प्रोबलम एण्ड पॉलिसिज'', मैक्ग्रा हिलबुक कम्पनी, आई.एन.सी.न्यूयार्क

3.Bhatia, S.S. (1965) "Patterns of Crop Combination and Diversification in India", Economics Geography, V0L-4
4.Government of India: The Gazetter of India, Vol-I, The Land, Publication Division, New Delhi (1965)
5.Chandel, R.S. (1971) "Agricultural Change in Bundelkhand Ragion", star Distributors Publication Division, Varanasi
6.Shafi M (1972) "Measurement of Agricultural Productivity of the Great Indian Plaining", The Geography, V0L-19, No1
7.सिहं, जसबीर (1976) ''एन एग्रीकल्चर ज्योग्रफी'', हरियाणा विशाल पब्लिकेशन, दिल्ली
8.Ali, Mohammed(1978) "Studies in Agricultural Geography", Rajesh Publication, New Delhi, 1978
9.कपूर, सुदर्शन कुमार (1974) ''भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी'', जयपुर
10.चौहान, टी.एस. (1987) ''एग्रीकल्चर ज्योग्रफी'', एकडेमिक पब्लिसर्स, जयपुर
11.Gill, K.S., Dhaliwal, G.S. & Honsra, B.S. (1993) "Changing Scenario a India Agriculture", Common Wealth Publication New Delhi
12.Pokhriyal, H.C. (1993) "Agrarian Economy of Central Himalaya", Indian Publication, Delhi
13.Dixit, K.R. (ed) (1994), "India Geomorphological Diversity", Rawat Publication, Jaipur, 1994
14.Shaffi, M (2005) "Agricultural Geography". Pearson Publications New Delhi
15.Singh Joshi (1999) "Agricultural Geography" Tata Mcgraw Hill Publication, PVT, LTD, New Delhi
16.Gurjar, R.K. and Jat, B.C. (2008) "Geography of Nature Resources", Rawat Publication, Jaipur
17.शर्मा (प्रो.) श्रीकमल (संपादक) (2012) भारत का वृहद् भूगोल, कंचन ऑफसेट प्रिन्टर्स , कोटा
18.तिवारी, आर.सी. (2008) ''भारत का भूगोल'', वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर
19.Gurjar, R.K. and Jat, B.C. ''भारत का भूगोल'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर
20. सिहं, सविन्द्र (2007) ''भू आकृति विज्ञान'', वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर

21.गौतम, अलका, ''भारत का वृहद भूगोल'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

22.Dixit, K.R. (ed) (1994), "India Geomorphological Diversity", Rawat Publication, Jaipur, 1994

23.चौहान, पी. आर, (2004) ''भारत का वृहद भूगोल'', वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर

24.राव बी.पी (2002) ''भारत एक भौगोलिक समीक्षा'', वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर

25.डाइरेक्टरेट ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड स्टेटिस्टिक्स, एग्रिकल्चरल स्टेटिस्टिक्स ऐट ए ग्लांस 2007, नई दिल्ली

26.कुमार प्रमिला एवं शर्मा, श्रीकमल (1998), ''कृषि भूगोल'', मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

27.अग्रवाल एन.एल. (2007) ''भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

28.हुसैन, एम, (2000) ''कृषि भूगोल'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर

29.शर्मा, भारद्वाज (2013) ''कृषि भूगोल'', आर. के. बुक्स, नई दिल्ली

30.गौतम, अलका (2012), ''कृषि भूगोल'', आर.के. बुक्स, नई दिल्ली

31.अताउल्लाह, मोहम्मद (2008) ''बिहार का आधुनिक भूगोल''

32.कौशिक, एस.डी एवं गौतम, अलका (2003), ''संसाधन भूगोल'', रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

33.मामोरिया, चतुर्भुज एवं मिश्रा, जे.पी. (2004), ''भारत का वृहत भूगोल'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

34.कुमार, अरविन्द (2004), ''गोरखपुर मण्डल में भूमि उपयोग क्षमता का गत्यात्मक विश्लेषण'', उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक –34

35.तिवारी, आर.सी. (2013), ''भारत का भूगोल'', (6 संस्करण) इलाहाबाद, प्रवालिका प्रकाशन

36.भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

37.राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो

38.भारत की भूमि उपयोग नीति, 2013

39.अष्ठाना, केशव प्रसाद (1995) ''आजमगढ जनपद का भूगोल'', अग्रवाल प्रकाशन, आजमगढ

40.Directortate of Economics and Statistics, Rajasthan (2011) Some facts about Rajastha

41.Directartate of Economics and Statistics Rajasthan (2011) district Statisticat Abstract.

42.Pokhriyal, H.C. (1993) "Agrarian Economy of Central Himalaya", Indian Publication, Delhi
43.खर्कवाल, एस.सी. (1996–97), ''हिमालय का प्रादेशिक भूगोल'', नूतन पब्लिकेशन्स विकास नगर कोरद्वार (गढवाल)
44.बिस्ट, एन.एस. (1997) ''उत्तराखण्ड हिमालय की अर्थव्यवस्था'' भागीरथी प्रकाशन, टिहरी
45.जोशी, एस.सी. (2004), ''उत्तरांचल पर्यावरण एवं विकास'', ग्यानोदय प्रकाशन, नैनीताल
46.बलूनी, दिनेश चन्द (2005), ''जनपद पौड़ी गढवाल'', विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून
47.पुरी, वी.के. एवं मिश्रा एस.के. (2013), ''भारतीय अर्थव्यवस्था'', हिमालयन पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई
48.Mishra, B.N. (ed.)(1990) " Land Utilization and Management in India", Chugh
49.तिवारी , आर.सी. एवं सिंह, बी. (2009) ''कृषि भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
50.पाण्डेय, जे.एन. (2008) ''कृषि भूगोल'', वसुन्धरा प्रकाशन
51.Singh R.P. and Islam, Zubairul (2010), (Research Paper) "Land Use Planning in Wastern Uttarpradesh Issue and Challenges", Journal of Environment and Nanstechnology, V0L-2.
52.सिंह, विजय एवं सिंह, चन्द्र प्रकाश (2011) ''मडिहार विकास खण्ड (मीरजापुर) में भूमि उपयोग एवं भूमि उपयोग क्षमता में स्थानिक कालिक परिवर्तन एक भौगौलिक अध्ययन'', दिसम्बर 2011, अंक 2
53.D. Chakraborty, K.H. Kamal and Other (2013) (A Research Paper) land use and Agri-Production a Case Study in Western Utter Pradesh, Recent Research in Science and Technology, V0L-2(9)
54.कुशवाहा, लालजी एवं शर्मा, वी.एन (2014) ''देवरिया में भूमि उपयोग परिवर्तन, एक भौगौलिक विश्लेषण'', राष्ट्रीय भौगौलिक पत्रिका, अंक –01
55.Office of the Registrar General & Census Commissioner, Ministry of Home Affairs, Government of India (2015) (census in Indian.gov.in), Open Government Data Platform India. Publish under National Data Sharing and Accessibility Policy (NDSAP)
56.शुक्ला, राजेश एवं शुक्ला, रश्मि (2014) ''कृषि भूगोल'', अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली
57.यादव (डॉ.) चन्द्रशेखर (2012) ''कृषि भूगोल'', विश्वभारती पब्लिकेशन्स नई दिल्ली

58.अग्रवाल (डॉ.) एन.एल. (2008) ''भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
59.खुल्लर, डी.आर (2020) ''ज्योग्राफी'', न्यूसरस्वती हाऊस (इण्डिया) प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली
60.चौहान, टी.एस (2020) ''ज्योग्राफी ऑफ राजस्थान'', साईन्टीफिक पब्लिशर्स, इण्डिया
61.आत्रे, (डॉ.) संजय, उपाध्याय, सच्चिदानन्द तथा यादव, अमित (2019) ''एग्रीकल्चर स्कीम्स'', संकल्प पब्लिकेशन, विलासपुर, छत्तीसगढ़
62.https://m.hindi,indiawater portal.org
63.https:// hi.wikipedia.org
64.https:// geography and you .com
65.https://www.scotburz.org.
66.https://shodhgangotri.inflibnat.ac.in/bitstream
67.https://oldror.lbp.world/uplodeddata.